वीरेन डंगवाल

प्रमुख समकालीन कवि वीरेन डंगवाल का जन्म 5 अगस्त 1947 ई० में कीर्तिनगर, टिहरी–गढ़वाल, उत्तरांचल में हुआ । मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, कानपुर, बरेली, नैनीताल में शुरुआती शिक्षा प्राप्त करने के बाद डंगवाल जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए० किया और यहीं से आधुनिक हिंदी कविता के मिथकों और प्रतीकों पर डी० लिट्० की उपाधि पायी । वे 1971 ई० से बरेली कॉलेज में अध्यापन करते रहे । डंगवाल जी हिंदी और अंग्रेजी में पत्रकारिता भी करते हैं । उन्होंने इलाहाबाद से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में कुछ वर्षों तक 'घूमता आईना' शीर्षक से स्तंभ लेखन भी किया । वे दैनिक 'अमर उजाला' के संपादकीय सलाहकार भी हैं ।

कबिता में यथार्थ को देखने और पहचानने का वीरेन डंगवाल का तरीका बहुत अलग, अनूठा और बुनियादी किस्म का है । सन् 1991 में प्रकाशित उनका पहला कविता संग्रह 'इसी दुनिया में' आज भी उतना ही प्रासंगिक और महत्त्वपूर्ण लगता है । उन्होंने कविता में समाज के साधारण जनों और हाशिये पर स्थित जीवन के जो विलक्षण ब्यौरे और दृश्य रचे हैं, वे कविता में और कविता से बाहर भी बेचैन करने वाले हैं । उन्होंने कविता के मार्फत ऐसी बहुत-सी वस्तुओं और उपस्थितियों के विमर्श का संसार निर्मित किया है जो प्राय: ओझल और अनदेखी थीं । उनकी कविता में जनवादी परिवर्तन की मूल प्रतिज्ञा है और उसकी बुनावट में ठेठ देसी किस्म के, खास और आम, तत्सम और तद्भव, क्लासिक और देशज अनुभवों की संश्लिष्टता है ।

वीरेन डंगवाल को 'दुष्चक्र में स्रष्टा' काव्य संग्रह पर साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुका है । उन्हें 'इसी दुनिया में' पर रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार मिला । उन्हें श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार और कविता के लिए शमशेर सम्मान भी प्राप्त हो चुका है । डंगवाल जी ने विपुल परिमाण में अनुवाद कार्य भी किए हैं । तुर्की के महाकवि नाजिम हिकमत की कविताओं के अनुवाद उन्होंने 'पहल पुस्तिका' के रूप में किया । उन्होंने विश्वकविता से पाब्लो नेरुदा, बर्तोल्त ब्रेख्त, वास्को पोपा, मीरोस्लाव होलुब, तदेऊष रूजेविच आदि की कविताओं के अलावा कुछ आदिवासी लोक कविताओं के भी अनुवाद किए ।

समसामयिक कवि वीरेन डंगवाल की कविताओं के संकलन 'दुष्चक्र में स्रष्टा' से उनकी कविता 'हमारी नींद' यहाँ प्रस्तुत है । सुविधाभोगी आराम पसंद जीवन अथवा हमारी बेपरवाहियों के बाहर विपरीत परिस्थितियों से लगातार लड़ते हुए बढ़ते जानेवाले जीवन का चित्रण करती है यह कविता ।

हमारी नींद

मेरी नींद के दौरान
कुछ इंच बढ़ गए पेड़
कुछ सूत पौधे
अंकुर ने अपने नाममात्र कोमल सींगों से
धकेलना शुरू की
बीज की फूली हुई
छत, भीतर से ।

एक मक्खी का जीवन-क्रम पूरा हुआ
कई शिशु पैदा हुए, और उनमें से
कई तो मारे भी गए
दंगे, आगजनी और बमबारी में ।

गरीब बस्तियों में भी
धमाके से हुआ देवी जागरण
लाउडस्पीकर पर ।

याने साधन तो सभी जुटा लिए हैं अत्याचारियों ने
मगर जीवन हठीला फिर भी
बढ़ता ही जाता आगे
हमारी नींद के बावजूद

और लोग भी हैं, कई लोग हैं
अभी भी
जो भूले नहीं करना
साफ और मजबूत
इनकार ।

बोध और अभ्यास

कविता के साथ

1. कविता के प्रथम अनुच्छेद में कवि एक बिम्ब की रचना करता है । उसे स्पष्ट कीजिए ।
2. मक्खी के जीवन-क्रम का कवि द्वारा उल्लेख किए जाने का क्या आशय है ?
3. कवि गरीब बस्तियों का क्यों उल्लेख करता है ?
4. कवि किन अत्याचारियों का और क्यों जिक्र करता है ?
5. इनकार करना न भूलने वाले कौन हैं ? कवि का भाव स्पष्ट कीजिए ।
6. कविता के शीर्षक की सार्थकता पर विचार कीजिए ।
7. व्याख्या करें –

   (क) गरीब बस्तियों में भी
   धमाके से हुआ देवी जागरण
   लाउडस्पीकर पर ।

   (ख) याने साधन तो सभी जुटा लिए हैं अत्याचारियों ने

   (ग) हमारी नींद के बावजूद
8. कविता में एक शब्द भी ऐसा नहीं है जिसका अर्थ जानने की कोशिश करनी पड़े । यह कविता की भाषा की शक्ति है या सीमा ? स्पष्ट कीजिए ।

कविता के आस-पास

1. वीरेन डंगवाल का कविता संग्रह 'दुष्चक्र में स्रष्टा' अपने पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें तथा यह जानने का प्रयत्न करें कि कवि ने अपने संग्रह का नाम यह क्यों रखा ?
2. आप वीरेन डंगवाल की तुलना उनके समकालीन बिहार के किन कवियों से करेंगे और क्यों ?

भाषा की बात

1. **निम्नांकित के दो-दो समानार्थी शब्द लिखें –**

   पेड़, शिशु, दंगा, गरीब, अत्याचारी, हठीला, साफ, इनकार
2. **निम्नांकित वाक्यों में कर्ता कारक बताएँ –**

   (क) मेरी नींद के दौरान / कुछ इंच बढ़ गए / कुछ सूत पौधे ।

   (ख) अंकुर ने अपने नाममात्र कोमल सींगों से / धकेलना शुरू की / बीज की फूली हुई / छत भीतर से ।

   (ग) गरीब बस्तियों में भी / धमाके से हुआ देवी जागरण / लाउडस्पीकर पर ।

   (घ) मगर जीवन हठीला फिर भी / बढ़ता ही जाता आगे / हमारी नींद के बावजूद ।
3. **निम्नलिखित वाक्यों में कर्म कारक की पहचान कीजिए –**

   (क) अंकुर ने अपने नाममात्र कोमल सींगों से / धकेलना शुरू की / बीज की फूली हुई / छत भीतर से ।

   (ख) कई लोग हैं / अभी भी / जो भूले नहीं करना / साफ और मजबूत / इनकार ।

X X X